टीबी ने एड्स को पीछे छोड़ा

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक संक्रामक रोगों से मृत्यु के संदर्भ में टीबी ने एचआईवी-एड्स को पीछे छोड़ दिया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि वर्ष 2014 में टीबी ने दुनिया भर में 11 लाख लोगों की जान ली जबकि इसी अवधि में एचआईवी-एड्स से 12 लाख लोग मारे गए जिनमें वे 4 लाख लोग भी शामिल हैं जो एचआईवी-एड्स और टीबी दोनों से पीड़ित थे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के टीबी कार्यक्रम के निदेशक डॉ. मारियो रेविग्लिओन ने बताया है कि रिपोर्ट के आंकड़ों से पता चलता है कि एचआईवी-एड्स के उपचार तक लोगों की पहुंच में तेज़ी से वृद्धि हुई है। इसके चलते बड़ी संख्या में लोग एचआईवी संक्रमण से ग्रस्त होने के बावजूद जी पा रहे हैं। मगर ये आंकड़े एक और बात की ओर इशारा करते हैं। वह यह है कि इन दो जानलेवा संक्रमणों (टीबी और एचआईवी) के लिए उपलब्ध वित्पोषण (फंडिंग) में गहरी असमानता है।

फंडिंग में असमानता को देखें, तो टीबी के मुकाबले एचआईवी-एड्स पर कई गुना अधिक राशि खर्च की गई। जहां टीबी पर कुल 8 लाख डॉलर खर्च किए गए, वहीं एचआईवी-एड्स के लिए यह आंकड़ा 8 अरब डॉलर रहा। संगठन के मुताबिक टीबी से निपटने के लिए फंडिंग का अभाव 14 अरब डॉलर के आसपास है।

वैसे निदेशक के अनुसार एक अच्छी खबर यह है कि टीबी के क्षेत्र में हस्तक्षेप की वजह से सवा चार करोड़ जानें बचाई जा सकी हैं। मगर तथ्य यह है कि टीबी के अधिकांश मरीज़ों को बचाया जा सकता है और इस तथ्य के मद्देनज़र टीबी से होने वाली मृत्यु दर बहुत अधिक मानी जाएगी।

रिपोर्ट में 205 देशों के टीबी सम्बंधी आंकड़े दिए गए हैं। इनमें टीबी की दवा-प्रतिरोधी किस्म, उसके सम्बंध में अनुसंधान व विकास तथा फंडिंग भी शामिल हैं। रिपोर्ट से पता चलता है कि वर्ष 2014 में विश्व स्वास्थ्य संगठन को टीबी के 60 लाख नए मामलों की सूचना दी गई थी। मगर लगता है कि यह संख्या वास्तव में कहीं ज़्यादा (करीब 96 लाख) होगी। इसके अलावा, 2014 में बहुऔषधि प्रतिरोधी टीबी के 4 लाख 80 हज़ार मामले हुए और शायद ऐसे 4 में से मात्र एक का ही निदान हुआ।

मेडिसिन सान्स फ्रंटियर (सरहद से मुक्त डॉक्टर्स) नामक संस्था के मुताबिक इस रिपोर्ट ने एक बार फिर रेखांकित किया है कि टीबी जैसी पुरानी मगर इलाज के काबिल बीमारी के लिए उपयुक्त फंडिंग उपलब्ध कराया जाना चाहिए और सही रणनीति अपनाई जानी चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***